eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 03, March 2026

मूक बधिर बच्चों के लिए सांकेतिक भाषा एवं प्रशिक्षण का महत्व (कानपुर नगर के संदर्भ में)

नैना शुक्ला[1]
[1]रिसर्च स्कॉलर, समाजशास्त्र विभाग डी0 बी0एस0 कॉलेज कानपुर (कानपुर विश्वविद्यालय कानपुर)

Received: 21 March 2026 Accepted & Reviewed: 25 March 2026, Published: 31 March 2026

Abstract

प्रस्तुत शोध पत्र मूक बधिर बच्चो द्वारा प्रयोग कि जाने वाली सांकेतिक भाषा पर आधारित है। सांकेतिक भाषा में, हस्त . संकेत प्रयुक्त किये जाते हैं । मूक बधिर बच्चों के लिए सांकेतिक भाषा एक महत्वपूर्ण संचार साधन है, जो उन्हे विचारो और भावनाओ को व्यक्त करने मे मदद करता है। सांकेतिक भाषा मूक बधिर बच्चो को अपने परिवार, समुदाय और समाज के साथ जुडने मे मदद करती है, जिससे उनका सामाजिक और शैक्षिक विकास होता है। कानपुर नगर मे मूक बधिर बच्चो के लिए सांकेतिक भाषा का महत्व बहुत अधिक है, क्योंकि यह उन्हे, अपने अधिकारो और आवश्यकताओ को व्यक्त करने से मदद करता है। सांकेतिक भाषा प्रशिक्षण मूक बधिर बच्चो को आत्मनिर्भर एव आत्मविश्वासी बनाने मे मदद करता है, जिससे वे अपने जीवन को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते है। इस शोध पत्र के माध्यम से हम मूक बधिर बच्चो के लिए सांकेतिक भाषा के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। और कानपुर नगर में इसके कार्यान्वयन की स्थिति का विश्लेषण करेंगे । हम यह भी देखेगे के कैसे साकेंतिक भाषा मूक बधिर बच्चों के जीवन को बेहतर बना सकती है, और उन्हे समाज मे शामिल होने में मदद कर सकती है। इस शोध पत्र के लिए 50 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है एवं शोध की सुगमता को ध्यान मे रखते हुए उद्देश्यपूर्ण एवं स्नोबॉल सेम्पलिंग का चुनाव किया गया है। इस शोध पत्र के माध्यम से सांकेंतिक भाषा का मूक बधिर बच्चो पर क्या प्रभाव पड़ता है इस पर विचाराधीन प्रकाश डाला गया।

कीवर्ड –

1) सांकेंतिक भाषा – चेहरे के हाव भाव की भाषा एवं हाथों के इशारों
2) स्पीच थेरपी – बोलने का तरीका
3) मूक बधिर – बोलने व सुनने में असमर्थ
4) पुनर्वासन – फिर से बसाने की क्रिया

Introduction

समाज की स्थिति सदैव एक समान नही रहती है। समाज मे रहने वाले व्यक्तियों का सांस्कृतिक प्रतिमान एवं मूल्य उनके विश्वासो, एवं विकास की स्थितियों, भौगोलिक परिस्थितियो आदि के अनुसार प्रतिपल बदलती रहती है। इसी बदलाव से विभिन्न प्रकार के बदलाव आते हैं । सामाजिक स्थितियो के परिवर्तन एवं सामाजिक पुनर्निर्माण पर यहाँ चर्चा का कारण क्या है? यह चर्चा इसलिए नितान्त आवश्यक है क्योकि समाज मे रह रहे मनुष्यों का एक बहत बड़ा वर्ग ऐसा है जिसके जीवन को बेहतर स्थिति मे लाने के लिए तथा समाज के अन्य सामान्य व्यक्तियो की तरह उन्को स्थापित करने के लिए आज सामाजिक परिस्थितियो मे परिवर्तन एवं समाज के पुनर्निर्माण की आवश्यकता है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 03, March 2026

हम जिक्र कर रहे है दिव्यांगजनो की, अपनी शारीरिक सीमितताओ के कारण से व्यक्ति समाज से विघटित होकर जीवन व्यतीत करने को विवश है। इन्ही दिव्यंगों के जीवन में सुधार के लिए एवं इनके पुनरुत्थान के लिए इनको समाज में पुनर्वासित करने की आवश्यकता है। ताकि ये भी अन्य व्यक्तियो की तरह एक सामान्य जीवन व्यतीत कर सकें ।

दिव्यांगता अथवा विकलांगता वह स्थिति है जिसमे मनुष्य किसी शारीरिक या मानसिक विकार के कारण एक सामान्य मनुष्य के द्वारा किये जाने वाले किसी भी कार्य जो मानव के लिए सामान्य समझी जाने वाली सीमा के भीतर होते है, उनको करने मे पूर्णतया असमर्थ होता है।

हमारे भारत मे यदि विकलांगता पर प्रकाश डाले तो ज्ञात होता है। भारत की 5–8% आबादी विकलांगता से ग्रस्त है। NSSO के अनुसार 3-3% जनसंख्या इस समस्या से ग्रसित है।

यह समस्या वर्तमान परिदृश्य मे भी समाज के पुनर्वासन पर आधारित है।

इस समस्या से ग्रसित बच्चे अपनी बातो व अपनी समस्याओ को हाथों के इशारों या शारिरिक हाव-भाव के माध्यम से दूसरों को बताते हैं । इसी इशारो व हाव भाव की भाषा सांकेंतिक भाषा कहलाती है ।

सांकेंतिक भाषा पर विचारधीन होने से पहले हमे सांकेंतिक भाषा के इतिहास से परिचित होना जरूरी है।

सांकेंतिक भाषा एक शारीरिक संचार माध्यम है जिसका प्रयोग आमतौर पर बधिर व गूंगे लोग करते हैं। विभिन्न देशो के बधिर लोग अलग–अलग सांकेंतिक भाषाएँ बोलते है। सांकेंतिक भाषा में हाव–भाव या प्रतीक भाषाएँ रूप से व्यवस्थित होते हैं। प्रत्येक व्यक्तिगत हाव–भाव को एक संकेत कहते है। फ्रांसीसी पादरी चार्ल्स–मिशेल डेल एपी (1712–1789) ने बदलाव की एक राह दिखाई। उनकी मृत्यु के सदियो बाद भी उन्हे सांकेंतिक भाषा और बधिर शिक्षा के जनक के रूप से मान्यता प्राप्त है। सर्वप्रथम 23 सितम्बर, 2018 को अंतर्राष्ट्रीय सांकेंतिक भाषा दिवस मनाया गया था। संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 19 दिसंबर 2017 को इस दिन की स्थापना की गई थी और इसे बधिरों के अंतर्राष्ट्रीय सप्ताह के हिस्से के रूप मे मनाया गया था। इसका उद्देश्य यह है कि सांकेतिक भाषा के महत्व के बारे में जागरुकता बढ़ाने और बधिर समुदाय के मानवाधिकारों को बढ़ावा देने के लिए मनाया जाता है ।

मूक बधिर बच्चो के लिए सांकेंतिक भाषा एक महत्वपूर्ण संचार साधन है , जो उन्हे अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने मे मदद करता है यह भाषा उन्के सामाजिक और शैक्षिक विकास मे महत्वपर्ण भूमिका निभाती है ।और उन्हे परिवार , समुदाय और समाज के साथ जुड़ने मे मदद करती है ।

जिससे ऐसे बच्चो के संचार मे सुधार होता है और अपने विचारो भावनाओं को व्यक्त कर पाते हैं । जिससे उनके संचार कौशल मे सुधार होता है। एवं इससे वे शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त कर पाते है। जिससे शैक्षिक प्रगति होती है। सामाजिक समावेशन के साथ वे आत्मनिर्भर भी बन पाते हैं ।

इस शोध पत्र मे मूक बधिर बच्चों– के जीवन मे किस प्रकार सांकेंतिक भाषा का महत्व है इस पर प्रकाश डाला गया है ।

शोध का उद्देश्य –

1. मूक बधिर बच्चो में संचार कौशल को जानना
2. मूक बधिर बच्चो में शैक्षिक प्रगति का आकलन करना

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 03, March 2026

3. मूक बधिर बच्चो में समाजिक समावेशन के स्तर को जानना
4. मूक बधिर बच्चो में समावेशी शिक्षा की स्थिति ज्ञात करना।

आज सांकेंतिक भाषा को नई शिक्षा नीति 2020 ने एक भाषा का दर्जा दिया है । इस नीति के तहत ISL को स्कूलो मे अन्य भाषाओ की, तरह पढ़ाया जाएगा ताकि बधिर और कम सुनने वाले छात्रों के लिए शिक्षा को समावेशी बनाया जा सके।

अध्ययन का महत्व– इस शोध का महत्व मूक बधिर बच्चो के जीवन मे सांकेंतिक भाषा कितनी महत्वपूर्ण है तथा उन्के जीवन व्यासों को किस प्रकार प्रभाव डालती है उसे प्रकाश दिया गया है।

शोध प्रविधि "प्रस्तुत शोध पत्र कानपुर परिक्षेत्र में संचालित मूक बधिर विधालयो मे अध्ययनरत बच्चों के लिए सांकेंतिक भाषा के महत्व व प्रशिक्षण पर आधारित है। उनके जीवन मे वे बच्चे इस प्रकार वार्तालाप व अपने भावो को प्रकट कर पाते है इस पर ध्यान आकर्षित किया गया है। प्रस्तुत शोध के लिए 50 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है और ये उत्तरदाता इन बच्चो के अभिभावक हैं । वर्तमान शोध सांकेंतिक भाषा के महत्व को जानने का एक सार्थक प्रयास है ।

मूक बधिर बच्चो के जीवन से सांकेंतिक भाषा का सामाजिक। आर्थिक पार्श्वचित्र

सा0 आर्थिक पार्श्वचित्र	विवरण			आवृत्ति
सामाजिक क्षेत्र	सा0 समावेशन 35%	सा0 कौशल 35%	आत्मनिर्भरता 30%	100%
आर्थिक क्षेत्र	रोजगार में अवसर 30%	आर्थिक स्वतंत्रता 35%	आर्थिक समावेशन 35%	100%
पार्श्वचित्र	शैक्षिक प्रगति 35%	सांस्कृतिक संरक्षण 30%	समावेशी शिक्षा 35%	100%

मूक बधिर बच्चे दूसरों से अपने हाव भाव को व अपने अंदर की समस्याओं को संकेतों के माध्यम से दूसरों को अवगत करातें हैं ।

मूक बधिर बच्चों के सांकेंतिक भाषा में सरकारी योजनाओं का आकलन

विवरण		आवृत्ति
मूक बधिर बच्चों को सांकेतिक भाषा की समझ है	20	20%
सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का लाभ मिल रहा है	20	20%
साइन लैंग्वेज को एक भाषा का दर्जा विद्यालयों में दिया जा रहा है ?	10	10%
सांकेतिक भाषा को बच्चे आसानी से सीख रहे हैं	45	45%
सामान्य बच्चे भी इस भाषा से अवगत हो रहे हैं	5	5%

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 03, March 2026

उपरोक्त सारणियों से ज्ञात हुआ है की विद्यालयों में सांकेंतिक भाषा की पहुँच अभी और होनी चाहिए । एवं सांकेंतिक भाषा के विकास एवं उसके और प्रगति के लिए सामान्य विद्यालयों में भी एक सामान्य विषय के तौर पर परिचित कराना चाहिए । अभी तक सिर्फ गूंगे बहरे विद्यालयों तक ही यह भाषा सीमित है ।

इन बच्चों को समाज की जीवन धारा से जुडने के लिए अति आवश्यक है वर्तमान परिपेक्षय मे नईं शिक्षा नीति ने एक इसे एक भाषा के रूप मे मान्यता दी है। और इसे स्कूलो मे एक भाषा विषय के रूप से पढ़ाने की मान्यता प्रदान की है। इसका लक्षय श्रवण बाधित छात्रों के लिए शिक्षा को अधिक समावेशी बनाना है। साथ ही साथ यह सुझाव भी देता है कि जहां तक संभव हो एवं प्रासंगिक हो इसे और विकसित किया जाए।

निष्कर्ष – शोध के परिणामो से ज्ञात हुआ है कि विद्यालयों में इस भाषा को लेकर अभी ज्यादा क्रियांनवित नही हुआ है, पर मूक बधिर विद्यालयों मे सांकेंतिक भाषा के द्वारा ही शिक्षा व वार्तालाप कि जाती है एवं विशेष शिक्षको की मूक बधिर विधालयो मे व्यवस्था है, जिससे बच्चों को और अधिक अच्छे से सांकेंतिक भाषा पर जानकारी होती जा रही है, निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि मूक बधिर बच्चों के लिए साँकेतिक भाषा एक अति विशेष संचार साधन है, जो उन्हे अपने विचारों और भावनाओ को व्यक्त करने मे मदद करती है। सांकेंतिक भाषा मूक बधिर बच्चो को आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनाने में मदद करती है। जिससे वे अपने जीवन को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं । इसके अलावा, सांकेंतिक भाषा मूक बधिर बच्चों को शिक्षा और रोजगार के अवसर प्रदान करती है , जिससे वे अपने जीवन को बहतर बना सकते हैं ।

इसलिए यह आवश्यक है कि मूक बधिर बच्चो के लिए सांकेंतिक भाषा को बढावा दिया जाए और उन्हे इस भाषा से प्रशिक्षण प्रदान किया जाए। इससे उन्हे अपने जीवन को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने में मदद मिलेगी और वे अपने समुदाय और समाज के साथ जुड़ सकेंगे।

मूक बधिर बच्चों के लिए सांकेंतिक भाषा को बढ़ावा देने के लिए सरकारी और गैर सरकारी संगठनों को मिलकर काम करना चाहिए । एवं मूक बधिर बच्चों को सांकेंतिक भाषा में प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए विशेष कार्यक्रम आयोजित किये जाने चाहिए। मूक बधिर बच्चों के लिए सांकेंतिक भाषा को शिक्षा प्रणाली में शमिल किया जाना चाहिए, ताकि वे अपने शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें ।

Reference :

- Raghuvanshi, Kuldeep Singh Pratap Maan, A Comprehensive Revivew on Indian Sign Language for Deaf and Dumb people, www.ijraseb.com Apr 2022, Page number 3387)
- Singh, Anju. (2020,September 20). Utter Pradesh ke Raajakeey Mook Badhir
- Vidyayalayan mein Adhyayanrat Vidyaarthyon ka Samaajashaastreey Adhyan.
- Shodh Ganga.
- Sharma, Annapurna. (2018). Mook Badhir Vidyarthion ke Samayojan Samasyaon ka
- adhyan Rajasthan ke sandarbh mein. Shodh Ganga.
- Bhaskar.com/Local/Uttar Pradesh/Firohabad/news/education of deafchildren
- https://www.bhaskar.com>news>CHH-DURG-MAL-Late
- Census of India 2011

- Chand Dinesh (shodh Ganga) (2 Nov-2017) "सामान्य मूक बधिर और दृष्टिहीन छात्रों की आदतों सास्कृतिक क्रियाकलापों एवं शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन"
- Disability affairs.gov.in
- Deaf and Dumb School-Goonge Bahre ka Vidyalaya. Saket Nagar
- https://earguru.in
- Friedman, RJ and J.C. Exceptional children, 1971
- Goonge Bahre ka Vidyalaya. P. Road, Kanpur.
- Hajela Rakhi (Patrika.com21Jan-2021)
- https://earguru.in नौकरियां/दिव्यांगों के लिएयोजनाएीपए Vikaspedia.in
- International Day of sign Language 2022 Daily current news Drasti IAS Youtube
- Channel.
- Kumar, Vasant. (2019, March 1) High School Star ke samaya fv mook badhir
- vidhyaaarthi ki Budhi ev Srijinatmak ka tulnatmak adhyan. Shodh Ganga.
- NEP2020 first anniversary livehindustan.com
- Mishra Deaf & Dumb Care Center Khapra Mohal, Rail Bazar, Kanpur
- Shukla, Vivek. (2021, Nov 29) अमर उजाला ब्यूरो गोरखपुर
- Verma, Pallavi and S.L., shini,ii. (2019, February) Design of communication
- interpreter for Deaf and Dumb person. Research Gate.